ISSN: 2278-1439, Volume 06, Issue 01, No. 11, July-December 2016, Page No. 28-30

homepage: www.vcebhopal.ac.in

Research Pool

An International Interdisciplinary Journal

शैक्षिक प्रतिमान तथा शैक्षिक प्रतिमान की विशेषताएँ

मंयक लिमये
सहायक प्राध्यापक
विक्टोरिया कॉलेज ऑफ एजुकेशन, भोपाल (म.प्र.)
Email: limayemayank@gmail.com

प्रस्तावनाः

शिक्षण प्रतिमान का विकास आदि काल से हो चुका है। शिक्षण प्रतिमान को शिक्षा दर्शन प्रणाली सामाजिक-मूल्यों तथा शिक्षा मनोविज्ञान ने प्रभावित किया है शिक्षा प्रणाली के उददेश्यों तथा मूल्यों को शिक्षा दर्शन ही निर्धारित करना है। शिक्षण के उददेश्यों की पूर्ति के लिए समुचित साधनों का निर्धारण शिक्षा मनोविज्ञान ही करता है इस प्रकार शिक्षण प्रतिमान का शिक्षा मनोविज्ञान से घनिष्ट संबधं है।

शिक्षण प्रतिमान का विकास अधिनियम के सिंद्धातो के आधार पर किया गया है शिक्षण सिद्धांत के अन्तर्गत चरों के कार्य, आपसी संबंधों तथा अंतःक्रिया की क्रमबद्ध रूप से व्याख्या की जाती है नये सिद्धांत का प्रतिपादन पूर्व सिद्धातों के आधार पर किया जाता है शिक्षण तथा अधिगम का घनिष्ट संबंध होता है शिक्षण अधिगम पर आधारित होता है। और अधिगम प्रतिमान पर यदि हम किसी भी प्रकार से अधिगम करते है तो उसके लिए प्रतिमान की आवश्यकता होती है यह प्रतिमान अनुदेशन का प्रारूप माने जाते है। इनके अन्तर्गत विशेष उददेश्य प्राप्ति के लिए विशिष्ट परिस्थिति का उल्लेख किया जाता है जिसमें छात्र व शिक्षक की प्रक्रिया इस प्रकार की हो कि उनके व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सके ।

अतः शिक्षण के क्षेत्र में कुशल शैक्षिक व्यवस्था के लिये शिक्षण प्रारूप बनाये जाते है जिन्हे शिक्षण प्रतिमान कहा जाता है। शिक्षण प्रतिमान का प्रयोग एक शिक्षक अपने शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए करता है। प्रतिमान शब्द का प्रयोग किसी आदर्श के रूप में और किसी पृष्ठ के छोटे आकार के रूप में प्रयोग किया जाता है। किसी आदर्श के सामने लाकर इन आदर्शों के अनुकरण द्वारा ग्रहण कराने का प्रयास किया जाता है दूसरी स्थिति में वस्तु के छोटे आकार को प्रतिमान के रूप में प्रयोग किया जाता है। जैसे हम किसी भवन बांध या प्रोजेक्ट का पहले उसका प्रतिमान बनाकर रूपरेखा तैयार करते हैं उसकी कार्य प्रणाली चैक करता है फिर सब कुछ ठीक होने पर वाास्तविक भवन बांध या प्रोजेक्ट प्रारम्भ करना है इस प्रकार शिक्षण प्रतिमान शिक्षण सिद्धांत विकसित करने की ओर पहला कदम है ये शिक्षण सिद्धांत को वैज्ञानिक आधार

प्रदान करते है। ये स्वयं सिद्ध कल्पनाएँ होती है, जिनका प्रयोग शिक्षक अपने शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए करता है।

शैक्षिक प्रतिमानों की विशेषताएँः

शैक्षिक प्रतिमानों के उपर्युक्त विवरण के आधार पर इनकी विशेषताओं के दर्शन किये जा सकते हैं–

- शैक्षिक प्रतिमान उचित शैक्षिक वातावरण पैदा करने की विभिन्न विधियों पर प्रकाश डालते हैं।
- शैक्षिक प्रतिमान अपनी मान्यताओं के आधार पर अधिगम अनुभवों की व्यवस्था करते हैं।
- शैक्षिक प्रतिमान छात्रों एवं शिक्षकों के मध्य अन्तः क्रिया को निर्देशित करते हैं।
- शैक्षिक प्रतिमान शिक्षक के लिए गाइड का कार्य करते हैं कि क्या पढ़ायें किस कक्षा के लिए कौन–सी विषय व अनुदेश सामग्री का चयन करें, कैसे पाठ का विकास करें, कौन सी शिक्षण नीति विधि या युक्तियों का प्रयोग करें तथा कैसे छात्रों को उपलब्धि का मूल्यांकन करें।
- शैक्षिक प्रतिमान शिक्षण प्रक्रिया में पूर्ण सुधार लाने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं।
- प्रत्येक शिक्षण प्रतिमान के निश्चित मूलभूत आधार होते हैं।
- ये शिक्षक और छात्रों दोनों को वांक्षित अनुभव प्रदान करते है।
- शिक्षण प्रतिमान छात्रों की रूचि का विनियोग करते हैं।
- शिक्षण प्रतिमान सामान्यतया शिक्षक के व्यक्तिगत मतों, दर्शन, चिंतन तथा मूल्यों पर आधारित होते है।
- प्रत्येक प्रतिमान किसी न किसी प्रकार के दर्शन से प्रभावित होता है।
- प्रत्येक प्रतिमान कुछ निश्चित शिक्षण सूत्रों का प्रयोग करता है (जैस ज्ञात से अज्ञात, स्थूल से सूक्ष्म या सरल से कठिन आदि)
- शिक्षण प्रतिमान सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति पर ध्यान देते है और मानव योग्यता के विकास में सहायता देते हैं।
- ये दार्शनिक सिद्धांतों तथा मनोवैज्ञानिक नियमों पर आधारित होते हैं।
- प्रतिमान का विकास निरन्तर अभ्यास, अनुभव साधना और प्रयोगों के पश्चात होता है।
- शैक्षिण प्रतिमान शिक्षण प्रक्रिया का व्यावहारिक पक्ष कहलाता है, जो शिक्षक के व्यक्तित्व से विकसित होता है।
- शिक्षण प्रतिमान शैक्षिक क्रियाओं एवं वातावरण का निर्माण करने वाली एक रूपरेखा होती है।
- शिक्षण प्रतिमान, विशिष्ट अनुदेशात्मक उद्धेश्यों की प्राप्ति के लिए विशिष्ट शिक्षण एवं अधिगम की विधियों के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।
- शिक्षण प्रतिमान, विशिष्ट अनुदेशात्मक उद्धेश्यों की प्राप्ति के लिए विशिष्ट शिक्षण एवं अधिगम की विधियों के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।
- ये शिक्षक के व्यक्तित्व की गुणात्मक उन्नति करने की ओर प्रयत्नशील होते है।

- ये शिक्षण–अधिगम सिद्धांतों का आधार लेकर बनाए जाते है। (शिक्षण प्रतिमान तथा शिक्षण अधिगम सिद्धांत, दोनो ही एक सिक्के के दो पहलू है)
- शिक्षण प्रतिमान कुछ निश्चित आधारभूत प्रश्नों का उत्तर देने में समर्थ होते है।
- यह तथ्यों का सुव्यवस्थित रूप है जिसके माध्यम से छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सकता है।
- शिक्षण प्रतिमान उन पर्यावरण परिस्थितियों की विशेष व्याख्या करते हैं, जिनमें छात्रों के प्रत्युत्तरों का निरीक्षण किया जाता है।
- प्रत्येक शिक्षण प्रतिमान बताता है कि अनुदेशन अनुक्रम के पश्चात छात्र क्या परफार्म करेंगे।
- प्रत्येक शिक्षण प्रतिमान की एक निश्चित व्यवस्था होती है।
- शिक्षण प्रतिमान मूल्यांकन के लिए मानदण्ड (कसौटी) प्रस्तुत करते है।
- शिक्षण प्रतिमान पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया में सुधार लाने में सक्षम होते है।
- शिक्षण प्रतिमान, अभ्यास एवं ध्यान से विकसित होते है। अतः इनका आधार चिंतन भी होता है।
- शिक्षण प्रतिमान छात्रों की रूचि, स्तर तथा उनकी अन्य विशेषताओं का प्रयोग करते हैं।
- शिक्षण प्रतिमान शिक्षण को एक कला के रूप में विकसित करने में सहायक होते है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1. **कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (2009).** शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार, विनोद पुस्तक मंदिरः आगरा।
2. **एस. के. गुप्ता (2008). शैक्षिक मनोविज्ञान,** प्रिन्टेज हॉल इण्डिया, नई दिल्ली।
3. **सिंह, रामपाल एवं शर्मा, ओ. पी. (2002). शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी**, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
4. **शर्मा, ए.ए. (2003)**. शिक्षा तकनीकी, इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउसः मेरठ।